CHETANA
International Journal of Education

Impact Factor
SJIF=5.689

Peer Reviewed/
Refereed Journal

ISSN-Print-2231-3613
Online-2455-8729

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

Received on 28th April 2021, Revised on 07th May 2021, Accepted 10th May 2021

शोधपत्र

कक्षा 11 के अनुसूचित जाति एवं गैर अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्चिंता का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का विश्लेषण

* आशा सेन, *शोधार्थी*
डॉ. नगेन्द्र सिंह, *आचार्य शिक्षा विभाग*
अधिष्ठाता शोध, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (एन.सी.ई.आर.टी.)
महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर
Email- ashasaindeep@gmail.Com, Mob.-7737494018

मुख्य शब्द - *अनुसूचित जाति, गैर अनुसूचित वर्ग, शैक्षिक दुश्चिन्ता, शैक्षिक उपलब्धि आदि।*

सार संक्षेप

आधुनिक समय में अनवरत रूप से होने वाले सामाजिक,आर्थिक व सांस्कृतिक परिवर्तनों के कारण व्यक्ति अनायास ही अनेक प्रकार की समस्याओं और तनाव से ग्रसित हो जाते हैं। शिक्षा की दृष्टि से देखे तो आज का किशोर अपनी आयु के संक्रामण काल में विभिन्न काराओं की वजह से स्वयं को तनावग्रस्त महसूस करने लगे हैं। उम्र के इस पड़ाव में ये किशोर अपनी बात किसी को साथ न तो साझा कर पाते है और न ही करना चाहते हैं। धीरे धीरे यही समस्या स्थायी होने लगती है और इसका परिणाम शैक्षिक दुश्चिता के रूप में प्रकट होता है। अधिकांश माता पिता भी यही चाहते हैं कि उनका बच्चा ही कक्षा में अव्वल आए इसके लिए वे बच्चे पर अप्रत्याशित भार डालते हैं। यदि बच्चा उनके आकांक्षाओं के अनुरूप प्रदर्शन नहीं कर पता तो वह इसको सहन नहीं कर पता और दुश्चिंता के गर्त में गिरता चला जाता है। अतः उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्चिताओं का उनकी अवस्था के संदर्भ में समाधान ढूंढने का प्रयास किया गया, जिससे कि वे अपने व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास कर सके।निष्कर्षतः अजमेर जिले के कक्षा 11 के अनुसूचित जाति एवं गैर अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्चिन्ता एवं शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं होता है। अजमेर जिले के कक्षा 11 के अनुसूचित जाति एवं गैर अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्चिंता एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया।

प्रस्तावना

आधुनिक युग में कई प्रकार के आर्थिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन हो रहे हैं, ये परिवर्तन व्यक्ति को अनेक प्रकार से प्रभावित कर रहे हैं, इन परिवर्तनों के कारण एवं अपनी आयु के संक्रमण काल में किशोर विद्यार्थी आज अनेक प्रकार की समस्याओं से ग्रसित हो गये है जिनका प्रभाव सबसे अधिक उनकी शिक्षा पर पड़ रहा है। किशोर विद्यार्थी को अपने जीवन में प्रत्येक क्षेत्र में अनेक प्रतियोगिताओं का सामना करना पड़ रहा है इन बाधाओं को हटाने केलिए किशोर निरंतर प्रयास करते है परन्तु जब निरंतर प्रयास से भी सफलता नहीं मिलती तो वे अनेक दुश्चिंताओं से ग्रसित हो जाते हैं।

अधिकांश माता–पिता यह चाहते हैं कि उनका बालक ही कक्षा में अव्वल आये और 95 प्रतिशत ही लाये। परन्तु सच्चाई यह है कि पढ़ाई लिखाई में कुछ बच्चे अव्वल आ पाते हैं सभी नहीं जो विद्यार्थी उच्च प्राप्तांक नहीं ला पाते है, वे अपने माता–पिता के क्रोध का शिकार हो जाते है। प्रत्येक किशोर हमेशा अपने जीवन में सफल होना चाहता है परन्तु कई परिस्थितियों में उसे असफलताओं का सामना करना पड़ता है।

दुश्चिंता शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के Anxients शब्द से हुई है जिसका अर्थ उत्तेजना तथा खौफ से होता है।शैक्षिक दुश्चिंता से अभिप्राय है कि जब बालक इच्छानुसार शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति नहीं कर पाता तो वह तनाव की स्थिति में आ जाता है जो लंबे समय तक बनी रही सकती है इसी को शैक्षिक दुश्चिंता कहा जाता है। अन्य शब्दों में कहा जा सकता है कि दुश्चिंता वह मानसिक विकार है जिसमे व्यक्ति भविष्य के प्रति आशंकित रहता है और नकारात्मकता में घिरता चला जाता है। दुश्चिंता तनावपूर्ण स्थिति को प्रदर्शित करने के लिए होने वाली एक सांवेगिक प्रक्रिया है।

आधुनिक समय में अनवरत रूप से होने वाले सामाजिक,आर्थिक व सांस्कृतिक परिवर्तनों के कारण व्यक्ति अनायास ही अनेक प्रकार की समस्याओं और तनाव से ग्रसित हो जाते हैं। शिक्षा की दृष्टि से देखे तो आज का किशोर अपनी आयु के संक्रामण काल में विभिन्न काराओं की वजह से स्वयं को तनावग्रस्त महसूस करने लगे हैं। उम्र के इस पड़ाव में ये किशोर अपनी बात किसी को साथ न तो साझा कर पाते है और न ही करना चाहते हैं। धीरे धीरे यही समस्या स्थायी होने लगती है और इसका परिणाम शैक्षिक दुश्चिता के रूप में प्रकट होता है। अधिकांश माता पिता भी यही चाहते हैं कि उनका बच्चा ही कक्षा में अव्वल आए इसके लिए वे बच्चे पर अप्रत्याशित भार डालते हैं। यदि बच्चा उनके आकांक्षाओं के अनुरूप प्रदर्शन नहीं कर पता तो वह इसको सहन नहीं कर पता और दुश्चिंता के गर्त में गिरता चला जाता है।

दुश्चिंता शब्द की उत्पत्ति लेटिन भाषा के शब्द Anxients से हुई है जिसका अर्थ है उत्तेजना या खौफ। मनोविज्ञान में इस शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग फ्रायड ने किया। शैक्षिक दुश्चिता के कई कारण हो सकते हैं जिनमें से प्रमुख निम्न हैं:–

- माता पिता द्वारा अत्यधिक अपेक्षित व्यवहार
- बालक का संकोची प्रवृत्ति का होना
- विद्यालय में शिक्षक का अनुचित व्यवहार
- बालक के समझ में विषयवस्तु का न आना
- साथी समूह के साथ परस्पर मैत्रीपूर्ण व्यवहार न होना
- निरंतर उपलब्धि स्तर का गिरता जाना
- पर्याप्त संसाधनों की कमी होना

शैक्षिक दुश्चिंता को दूर करने का सबसे सरल उपाय है परिस्थितियों को समझ कर औके अनुरूप व्यवहार करना। किसी भी प्रकार के संकोच या संशय होने पर दुश्चिंता बढ़ती जाती है अतः विषयवस्तु में किसी भी प्रकार की असुविधा होने पर शिक्षक के सहयोग से उसका तुरंत समाधान कर लेना ही उत्तम उपाय है। परिवार का सहयोग और सकारात्मक वातावरण भी बालक की शैक्षिक दुश्चिंता दूर करने में अहम भूमिका निभाता है अतः घर का वातावरण इस प्रकार का होना चाहिए जिसमे बालक निश्चिंत व निडर हो कर अपनी समस्याएँ बता सके ताकि उस समस्या के अधिक विकट होने से पहले ही उसका समाधान निकाला जा सके।

उच्च माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक दुश्चिंता उत्पन्न होने के कारण संवेगों की परिवर्तनशीलता, तीव्रगति से शारीरिक विकास, स्वतंत्रता की अभिलाषा, समायोजन, शैक्षिक चिंता आदि।

इस प्रकार क्रमबद्ध लेख से स्पष्ट है कि विद्यार्थी शैक्षिक दुश्चिताओं के शिकार हो जाते हैं जिसका प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धि स्तर पर पड़ता है।

अतः उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्चिताओं का उनकी अवस्था के संदर्भ में समाधान ढूंढने का प्रयास किया जाना चाहिए। जिससे कि वे अपने व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास कर सके।

शोध का महत्त्व

प्राचीन समय में शिक्षा प्रायः शिक्षक केन्द्रित थी। आज शिक्षा शिक्षार्थी केन्द्रित शिक्षण का युग है। आज यह माना जाता है कि शिक्षा एक सहज प्रक्रिया है और इसके द्वारा बालक के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास किया जाता है।

आज का विद्यार्थी कल का नागरिक है अतः उसके उत्थान के लिए उसके संवेगों पर नियंत्रण और दुश्चिन्ताओं का समाधान करना ही वर्तमान समय की महती आवश्यकता है। क्योंकि विद्यार्थी में कभी–कभी अनेक क्षमताओं के होते हुये भी संवेगात्मक लब्धि की कमी असफलता का कारण बनती है।

संवेगों के उचित प्रबन्धन के अभाव में विद्यार्थियों में तनाव, चिंता, कुंठा, भन्गाशा, अवसाद जैसी शिक्षा अवरोधी समस्याएँ जन्म लेती है। संवेगात्मक बुद्धि विद्यालय और कार्यक्षेत्र में सफलता पर निर्भर करती है। छात्रों में संवेगात्मक बुद्धि धृष्टता या आक्रामकता में कमी, अधिक लोकप्रियता एवं सुधारात्मक अधिगम की ओर अग्रसर करती है तथा नशीली दवाओं, धुम्रपान और लिंग सम्बन्धी मामलों में अधिक सही निर्णय लेने की ओर अग्रसर करती है इसके द्वारा छात्रों में उनकी छुपी हुयी और अन्य दक्षताओं को विकसित करने का प्रयास किया जा सकता है। विद्यार्थियों में संवेगात्मक स्थिरता का न होना और शैक्षिक चिंता एक ज्वलंत समस्या है। उपर्युक्त समस्याओं का अपेक्षित समाधान ढूँढना ही प्रस्तुत शोध विषय चयन की महती आवश्यकता रही है।

अतः शोद्यार्थी ने अपने अध्ययन में कक्षा 11 के अनुसूचित जाति एवं गैर अनुसूचित वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्चिंता को महत्त्वपूर्ण स्थान देने का प्रयास इसलिए किया क्योंकि वर्तमान संदर्भ में अध्ययन का महत्त्व बढ़ता जा रहा है। अतः शैक्षिक दुश्चिंता के सन्दर्भ में यह शोधकार्य करने का प्रयास किया है एवं अपने अध्ययन में इनका महत्त्व स्थापित किया है साथ ही यह अध्ययन विद्यार्थियों के अलावा शिक्षा से जुड़े अन्य पहलुओं के लिए भी महत्त्वपरक होगा तथा कई विशिष्ट तथ्यों को ध्यान में रखते हुए इस शोध विषय की नींव रखी गई है।

समस्या कथन

प्रस्तुत समस्या शोध कार्य के अन्तर्गत **" कक्षा 11 के अनुसूचित जाति एवं गैर अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्चिंता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का विश्लेषण"** करना है।

शोध के उद्देश्य

शोध अध्ययन के निम्न उद्देश्य निर्धारित किए गए है –

1. अनुसूचित जाति एवं गैर अनुसूचित जाति के कक्षा 11 के अजमेर जिले के विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्चिंता में अंतर ज्ञात करना।
2. अनुसूचित जाति एवं गैर अनुसूचित जाति के कक्षा 11 के अजमेर जिले के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर ज्ञात करना।
3. अनुसूचित जाति एवं गैर अनुसूचित जाति के कक्षा 11 के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक दुश्चिंता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए शोद्यार्थी ने निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया है –

1. अनुसूचित जाति एवं गैर अनुसूचित जाति के कक्षा 11 के अजमेर जिले के विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्चिंता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. अनुसूचित जाति एवं गैर अनुसूचित जाति के कक्षा 11 के अजमेर जिले के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. अनुसूचित जाति एवं गैर अनुसूचित जाति के कक्षा 11 के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक दुश्चिंता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि से कोई सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है।

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त शब्दावली की व्याख्या

समस्या से सम्बन्धित चरों को स्पष्ट करने से शोध कार्य को नई दिशा मिलती है। अतः सम्बन्धित चरों का परिभाषीकरण इस प्रकार किया गया है।

परिभाषिक शब्दावली

1. **विद्यार्थी :–** विद्या अथवा शिक्षा अर्जित करने की लालसा रखने वाला प्रत्येक प्राणी विद्यार्थी कहलाता है।
2. **शैक्षिक दुश्चिंता :–** दुश्चिंता शब्द अंग्रेजी के Anixety का हिन्दी अर्थ उद्वेलना की स्थिति है। मन की अत्यधिक तनावपूर्ण स्थिति ही दुश्चिंता है।

   अतीत मन की वह तनावपूर्ण स्थिति जिसमें विद्यार्थी अपने शैक्षिक जीवन की सफलता में संदेह से आशांकित रहता हुआ उपलब्धि स्तर को प्रभावित करें, वह स्थिति शैक्षिक दुश्चिंता कहलाती है।
3. **अनुसूचित जाति :–** अनुसूचित शब्द का अर्थ है तालिका अर्थात सूचिबद्ध। साधारण शब्दों में कहा जा सकता है कि ऐसी कोई भी चीज जिसकी विशेष तालिका तैयार की गई हो भारतवर्ष में जिन जातियों को समाज की सामाजिक, शैक्षिक व आर्थिक आधार पर कमजोर माना गया है उन्हें अन्य जातियों के समान सामाजिक सुविधाएँ प्रदान करके दूसरे लोगों के समान लाया जावे। इस आधार पर इन जातियों की सूचि बनाई है है। भारतवर्ष में वर्ण व्यवस्था तथा जाति व्यवस्था यहां के समाज की एक विशेषता रही है। अनुसूचित जातियों में 59 जातियाँ है, किन्तु बहुसंख्या में चमार, जाटव, मोची, रेगर, खटीक आदि है। जो चमड़े के व्यवसाय से सम्बन्धित है। इन वर्गो के विकास हेतु संविधान के भाग 16 में अनुच्छेद 330 से अनु. 342 में विशेष प्रावधान किये गये है।
4. **गैर अनुसूचित जाति :–** अनुसूचित जाति के अलावा सभी जाति के विद्यार्थियों को वर्तमान अध्ययन के लिए लिया गया है।
5. **विद्यालय :–** विद्या + आलय इसका शब्दिक अर्थ विद्या का घर या विद्या का आलय है।

   विद्यालय को उनमें संचालन के आधार पर दो भागों में बांटा जा सकता है –

   1. राजकीय विद्यालय (सरकारी विद्यालय) :– ऐसा विद्यालय जिनका पूरा संचालन सरकार के कानूनों के अनुरूप चलता है। विद्यालय प्रशासन तथा कर्मचारियों को वेतन सरकार द्वारा प्राप्त होता है।

   2. अराजकीय विद्यालय (निजी विद्यालय) :– ऐसे विद्यालय जिनका पूरा संचालन निजी संस्था या समुदाय द्वारा होता है ऐसे विद्यालय में कर्मचारियों को वेतन संस्था द्वारा ही दिया जाता है।
6. **शैक्षिक उपलब्धि :–** शैक्षिक उपलब्धि बालक के उन क्रियाकलापों का प्राप्त परिणाम है जो उनकी विद्यालय की शैक्षिक व सहशैक्षिक गतिविधियों के आधार पर प्राप्त होती है। उपलब्धि परीक्षण के द्वारा ही विद्यालय में विषय सम्बन्धी ज्ञान की परीक्षा एवं विभिन्न कक्षाओं में पाठ्यक्रम का निर्धारण किया जाता है। अध्यापक प्रत्येक छात्र के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त

करना चाहता है कि उसने सम्बन्धी विषयों में जानकारी कितनी मात्रा में प्राप्त की है शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण का सम्बन्ध वर्तमान से है।

इबेब – ''उपलब्धि परीक्षा वह अभिकल्प है जो विद्यार्थी के द्वारा ग्रहण किये गये ज्ञान कुशलता या क्षमता का माप करता है।''

शैक्षिक उपलब्धि – शैक्षिक विषयों में छात्रों द्वारा प्राप्त योग्यता एवं कौशल जिसे साधारण परीक्षाओं में प्राप्तांकों से मापा जाता है।

उपलब्धि – बालक विद्यालय में सीखता है किसी भी क्षेत्र में अर्जित ज्ञान को उपलब्धि कहते हैं।

शैक्षिक उपलब्धि – किसी भी बालक व बालिकाओं के वार्षिक परीक्षाओं के अंक ही उसकी शैक्षिक उपलब्धि मानी जाती है।

अध्ययन का सीमांकन

प्रस्तुत शोधकार्य अजमेर जिले के कक्षा 11 के सरकारी एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों तक सीमित रहेगा।

शोध विधि

अध्ययन विधि से शोधार्थी का तात्पर्य एक निश्चित व्यवस्थानुसार अध्ययन करने की प्रणाली से है। अध्ययन विधि उस विधि को सूचित करती है जिस पर चलकर सत्य की खोज की जा सके।

प्रस्तुत शोध में विषय की समस्या को भली प्रकार समझकर, सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन करने के पश्चात् यह निष्कर्ष निकाला गया कि शोध समस्या के मुख्य उद्देश्य अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि से अधिक सम्बन्धित है। अतः शोध की प्रकृति व सर्वेक्षण विधि की उपयोगिता के आधार पर शोधार्थी ने प्रस्तुत अनुसंधान में आँकड़ों के एकत्रीकरण हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है।

न्यादर्श

शोधार्थी द्वारा न्यादर्श में राजस्थान के अजमेर जिले के कक्षा 11 के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत 400 विद्यार्थियों का चयन किया जायेगा।

चयनित न्यादर्श को इस प्रकार प्रदर्शित किया गया है –

न्यादर्श का वितरण

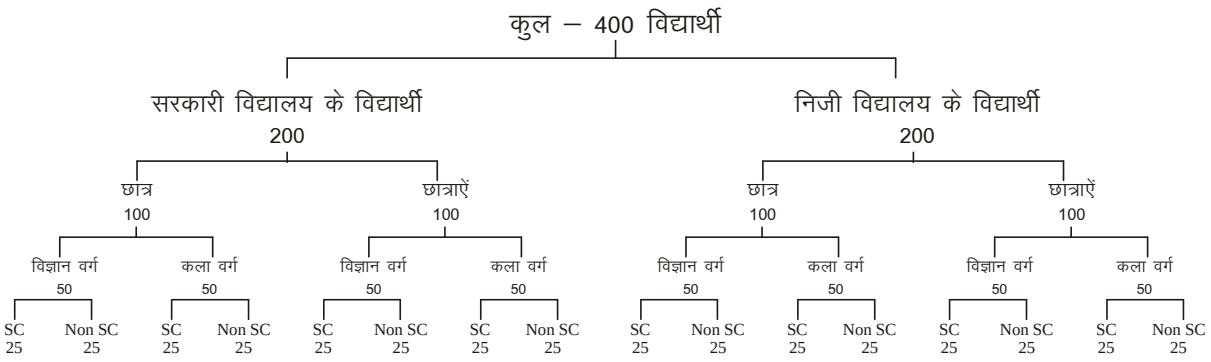

शोध के उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्नलिखित प्रमाणीकृत उपकरण का प्रयोग किया गया है –

1. शैक्षिक दुश्चिंता मापनी :– शोधार्थी द्वारा कक्षा 11 के विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्चिंता अध्ययन करने के लिए डॉ. ए. के. सिंह एवं ए. सेन गुप्ता द्वारा निर्मित शैक्षिक दुश्चिंता मापनी का प्रयोग किया गया।
2. शैक्षिक उपलब्धि :– कक्षा 10 के प्राप्तांको को लिया गया है।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी –

प्रस्तुत शोधकार्य में एकत्रित आंकड़ों के विश्लेषण हेतु निम्न सांख्यिकी का प्रयोग किया जायेगा–

1. मध्यमान, 2. प्रमाणिक विचलन, 3. टी–मान, 4. सह सम्बन्ध

वर्तमान अध्ययन के शोध निष्कर्ष :–

कार्य समाप्ति के पश्चात परिणाम अथवा निष्कर्ष निकाला जाता है एवं उसके गुण एवं दोषों का पता लगाया जाता है। वर्तमान शोध कार्य के प्रभाव को जानने के लिए निष्कर्षो का वर्णन किया गया है

अजमेर जिले के कक्षा 11 के अनुसूचित जाति एवं गैर अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्चिंता का अध्ययन

- शोध की परिकल्पना संख्या–1 अजमेर जिले के कक्षा 11 के अनुसूचित जाति एवं गैर अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के कुल शैक्षिक दुश्चिन्ता के सन्दर्भ में स्वीकृत की जाती है। जिसके अनुसार अजमेर जिले के कक्षा 11 के अनुसूचित जाति एवं गैर अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्चिन्ता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- अजमेर जिले के कक्षा 11 के गैर अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की कुल शैक्षिक दुश्चिन्ता का मान, अजमेर जिले के कक्षा 11 के अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों से कुछ अधिक पाया गया।

अजमेर जिले के कक्षा 11 के अनुसूचित जाति एवं गैर अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

- अजमेर जिले के कक्षा 11 के गैर अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की कुल शैक्षिक उपलब्धि का मान, अजमेर जिले के कक्षा 11 के अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों से कुछ अधिक पाया गया।
- शोध की परिकल्पना संख्या–2 अजमेर जिले के कक्षा 11 के अनुसूचित जाति एवं गैर अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के कुल शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में स्वीकृत की जाती है। जिसके अनुसार अजमेर जिले के कक्षा 11 के अनुसूचित जाति एवं गैर अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

अजमेर जिले के कक्षा 11 के अनुसूचित जाति एवं गैर अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्चिंता एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन

- अजमेर जिले के कक्षा 11 के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा शैक्षिक दुष्चिन्ता के प्राप्तांकों के मध्य 0.01 स्तर पर सार्थक धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।
- शोध की परिकल्पना संख्या 17 विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा शैक्षिक दुष्चिन्ता के सन्दर्भ में अस्वीकृत की जाती है जिसके अनुसार '' अजमेर जिले के कक्षा 11 के अनुसूचित जाति एवं गैर अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्चिंता एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं होता है।''

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. पाठक, पी.डी. (2009) ''शिक्षा मनोविज्ञान'' : विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
2. शाह, एम.ए. (2009) ''मनोविज्ञान परीक्षण'' : विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
3. श्रीवास्तव, डी.एन. (2009) ''सांख्यिकी व मापन'' : विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

4. भटनागर, ए.बी. मीनाक्षी (2008) ''मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन'' : आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।

5. शर्मा, आर.ए. (2008) ''शिक्षा अनुसंधान'' : आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।

6. उपाध्याय, भार्गव एवं त्यागी (2007) ''अधिगम का मनोसामाजिक आधार एवं शिक्षण'' : अरिहन्त शिक्षा प्रकाशन, जयपुर।

7. शर्मा, आर.ए. (2006) ''शिक्षा तकनीकी'' : कमल बुक डिपो, मेरठ।

8. भार्गव महेश (2006) ''आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षा एवं मापन'' : एच.पी. भार्गव बुक हाऊस, कचहरी घाट, आगरा।

9. सिंह अरूण कुमार (2005) ''मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ'' : मोतीलाल बनारसीदास प्रकाश, पटना

10. वर्मा, रामपाल सिंह (2004) ''व्यावहारिक मनोविज्ञान'' : विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा

11. वर्मा रामपाल सिंह, सेवानी, अशोक एवं सिंह,नगेन्द्र (2014) ''शिक्षण एवं अधिगम का मनोविज्ञान'' : अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा–2।

*** Corresponding Author**

आशा सेन, *शोधार्थी*

डॉ. नगेन्द्र सिंह, *आचार्य शिक्षा विभाग*

अधिष्ठाता शोध, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (एन.सी.ई.आर.टी.)

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

Email- ashasaindeep@gmail.Com, Mob.-7737494018